डाक टिकट संग्रह–एक जुनून

पंकज गर्ग
रूड़की

एक पहेली कि ऐसी कौन सी चीज है, जिसके पैर नहीं होते, फिर भी हर जगह जाती है जिसे सही करने के लिए उस पर प्रहार किया जाता है उत्तर–डाक टिकट।

यह डाक टिकट केवल दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण को ही सुनिश्चित नहीं करता बल्कि देश की अर्थव्यवस्था व रोजगार के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज के युग में ई–मेल और एस.एम.एस. के दौर में भले ही डाक टिकटों की जरूरत कम हो गयी है लेकिन इनका महत्व नहीं घटा। डाक टिकट में दर्ज होती है हमारी राष्ट्रीय संस्कृति और ऐतिहासिक पहचान। पुराने डाक टिकट बन जाते हैं हमारी विरासत, जिनकी बोली लगती है लाखों व करोड़ों में।

डाक टिकट

डाक टिकट एक छोटा कलात्मक और ऐतिहासिक दस्तावेज होता है जो किसी भी राष्ट्र के इतिहास के साथ–साथ इसके प्राचीन एवं अर्वाचीन कार्यकलापों को अभिव्यक्त करता है। विश्व के लगभग सभी देश विभिन्न विषयों पर डाक टिकट जारी करते हैं। डाक टिकट के शौक को ''फिलैटिली'' कहते हैं तथा डाक टिकट जमा करने वाले शौकीन लोगों को ''फिलैटेलिस्ट'' कहा जाता है।

सुप्रसिद्ध इतिहासकारों के अनुसार ऐतिहासिक सामग्री के प्रमुख स्त्रोत–प्राचीन ग्रन्थ, शिलालेख, सिक्के, प्राचीन भवन, प्रतिमाएं, चित्र आदि माने जाते हैं। विगत लगभग एक शताब्दी से स्त्रोतों की लम्बी श्रृंखला में एक नई महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ी वह ''डाक टिकट'' डाक टिकट किसी भी राष्ट्र की न केवल वर्तमान काल की उल्लेखनीय घटनाओं का अंकन करते है अपितु शताब्दियों पूर्ण घटित घटनाओं, निर्मित भवनों व उत्पन्न महापुरूषों आदि की स्मृति भी सदा के लिये सुरक्षित बना देते हैं। वास्तव में डाक टिकट किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति के प्रचारक कहे जा सकते हैं।

प्राचीन डाक व्यवस्था

वर्षों तक डाक सेवा केवल सरकारी दस्तावेजों व पत्रों के लिये ही थी। तब पत्र ऊंट, घोड़ों पर भेजे जाते थे, जैसे–जैसे समय गुजरा ब्रिटिश सरकार ने जनता के लिये डाक सेवा की छूट दी, उस समय डाक पहुंचाने का शुल्क पत्र के वजन व दूरी के अनुसार लिया जाता था।

उस समय चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में अस्तित्व में आई यह प्रणाली महंगी थी। डाकदर कम से कम एक शिलिंग थी और बीच के अन्तर के लिये पाउण्ड भी देने पड़ते। यदि एक साथ 10–12 पत्र आ जाते तो पत्र पाने वाले को अचानक ही आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता। इस तरह डाक सेवा बहुत ही महंगी होने के कारण सामान्य जनता उसका फायदा नहीं उठा पाती थी।

1835 में इस व्यवस्था के विरूद्ध जनता का असन्तोष बढ़ गया, कई बार लोग पत्र वापस करने अथवा डाक शुल्क देने में आनाकानी करते, इस व्यवस्था का फायदा जिस अंग्रेज ने उठाया वह था विलियम डोकबरा, उसने मात्र एक पेंस के खर्च में लन्दन से आये पत्र किसी भी स्थान पर

पहुंचाने का शुल्क घोषित किया। लोगों की डाक इक्ट्ठी करने के लिये विभिन्न स्थानों पर जगह–जगह विशेष प्रकार के डब्बे लगाये (लैटर बाक्स)।

लोगों का इस सस्ती डाक सेवा को भरपूर सहयोग मिला, परन्तु इस डाक व्यवस्था के कारण सरकारी डाक व्यवस्था लड़खड़ा उठी, फलस्वरूप राजतन्त्र तमतमा गया, अखिरकार शाही फरमान जारी करके डोकबरा की यह डाक सेवा बन्द कर दी गयी। 1834 में लन्दन के समाचार पत्र प्रकाशक चार्ल्स नाइट ने सुझाव दिया कि ऐसे रैपर छापे जायें जिन पर एक पेनी का टिकट छपा हो और उन्हें समाचार पत्र पर लपेट दिया जाये। जेम्स चामर ने पहली बार गोंद लगे डाक टिकट शुरू करने का सुझाव दिया व कुछ नमूने भी तैयार किये।

उसी समय प्रसिद्ध शिक्षक सर रोलेण्ड हिल ने सरकारी डाक सेवा का गहरा अध्ययन कर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को कई सुझाव दिये जिनमें मुख्य सुझाव था कि पत्र का दूरी के आधार पर तय करने के स्थान पर एक निश्चित शुल्क हो जो कितनी भी दूरी के लिये हो, लागू किया जाये, लोग यह शुल्क आसानी से भुगतान कर उस सेवा का उपयोग कर सकते थे।

रोलेंड हिल समयानुकूल थे, उनकी पहचान और सम्बन्धों का उन्हें पूरा–पूरा फायदा मिला इसके अतिरिक्त बड़े–बड़े व्यापारियों और आम जनता का भी सहयोग मिला। उनकी जान–पहचान के कारण महारानी ने उनके सुझावों को जारी करने के निर्देश दिये और थोड़े से विरोध के बाद उनके सुझावों को मान्यता देकर उस पर विस्तृत रिर्पोट तैयार करने के आदेश दिये। रोलेंड हिल ने 1837 में इस प्रस्तावित डाक प्रणाली पर एक रिपोर्ट तैयार की। टिकट को दोबारा उपयोग में न लाये जा सके, इसके लिये ऊपर मोहर लगाई जाती थी पर काले रंग के टिकटों पर मोहर जल्दी दिखाई न देने के कारण लोग इनका दोबारा प्रयोग करते जिससे डाकघर को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता। यह बात ध्यान में रखकर सरकार ने टिकट वापस लेकर लाल रंग के टिकट छापने शुरू किये और बहुत कम समय में संसार भर में डाक टिकटों का साम्राज्य खड़ा हो गया।

इन टिकटों के प्ररेणा स्त्रोत सर रोलेंड हिल थे। यह डाक टिकट काले लेबूल "पैनी ब्लेक" के नाम से प्रसिद्ध हुये।

19वीं सदी की महत्वपूर्ण घटना थी डाक टिकट का अस्तित्व में आना, विश्व का पहला डाक टिकट ब्रिटेन में 6 मई 1840 को जारी किया गया था। यहीं से डाक टिकटों की परम्परा का शुभारंभ हुआ।

रोलेंण्ड हिल का जन्म 3 दिसम्बर 1795 को ब्रिटेन में हुआ था, वह एक सफल प्रशासक व शिक्षाविद थे। 1860 में हिल को उनके अमूल्य योगदान के लिये "सर" की उपाधि से विभूषित किया गया, 27 अगस्त 1879 को लन्दन में उनकी मृत्यु हो गयी।

भारत–डाक टिकट

भारत में 1854 में डाक टिकट का प्रचलन शुरू हुआ इससे पहले 1 जुलाई, 1852 को सिन्ध के कमिश्नर बार्टले फ्रेरे ने "सिन्ध डाक" नाम से 1/2 आने का डाक टिकट जारी किया। इसके पश्चात फिर से 1/2 आने का "सिन्ध डाक" नामक डाक टिकट 1 जुलाई, 1852 में कराची में जारी किया जो लाल रंग के कागज का था तथा इस पर "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" और "सिन्ध डाक डिस्ट्रिक्ट शब्द" उभारे गये थे। ये टिकट 1854 में वापस ले लिये गये थे। उनके बदले पूरे भारत में एक अक्टूबर 1854 में 1/2 आना व एक आने के सामान्य श्रेणी के डाक टिकट जारी किये गये। चार आने के टिकट 15 अक्टूबर, 1854 को जारी किये गये।

हमारे देश में पहले डाक टिकट डिजाइनर कैप्टन एच.एल. थाईलर थे, जो कोलकत्ता में डिप्टी सर्वेयर जनरल थे। उन्होंने भारत के पहले डाक टिकट 1/2 आना, एक आना, चार आना के जारी किये जो कि शिलाछाप की कला द्वारा श्री मुनिरूद्दीन नामक व्यक्ति द्वारा बनाये गये थे। डाक टिकट जब भारत उपनिवेश था, उस समय के कहलाते हैं, जबकि आजाद भारत का प्रथम डाक टिकट 3.5 आने का जय हिन्द के नारे के साथ 21 नवम्बर, 1947 के दिन जारी किया गया था।

प्रथम सरकारी डाक टिकट 1866 में जारी किया गया था, हैदराबाद राज्य द्वारा 1873 में शुरू किया गया था, इन प्रशासकीय डाक टिकटों पर आफिशियल सर्विस या फिर सरकारी जैसे अक्षर हर राज्य द्वारा अंकित किये जाते थे।

डाक टिकट संग्रह

डाक टिकट कुछ व्यक्तियों के लिये सिवाए रंगीन कागज के चन्द टुकडों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होते। वही कागज के नन्हें–नन्हें टुकड़े मिनटों में देश के इतिहास, संस्कृति, कला ज्ञान एवं विज्ञान की जानकारी सहजता से दे देते हैं। वास्तव में डाक टिकट अपने–अपने देश के छोटे–छोटे राजदूत हैं, जिनके द्वारा संसार में बंधुत्व की भावना एवं शान्ति का सन्देश फैलता है। किसी देश में प्रचलति डाक टिकट स्वयं में विभिन्न तरह के प्रमाण पत्र होने के साथ–साथ उस देश की वस्तुस्थिति के अभिलेख भी होते हैं।

आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व डाक टिकट का संकलन के शौक को ''सनक'' की उपाधि से अलंकृत किया गया था जिसे कालांतर में''शौकों का राजा और राजाओं का शौक'' बनने का सम्मान अर्जित हुआ। यह बताना कठिन है कि इस ''सनक'' का शुभारम्भ कब कहां और किसके द्वारा हुआ परन्तु यह निश्चित है कि इसकी शुरूआत 6 मई 1940 को इंलैण्ड में विश्व के प्रथम डाक टिकट के निर्गमन के पश्चात् हुई।

प्रारम्भिक कुछ दशकों तक यह अधिकांश स्कूली बच्चों तथा उत्साही युवकों तक ही सीमित रहा परन्तु 1863 तक धीरे–धीरे यह शौक गम्भीर प्रकृति के लोगों के दिलो–दिमाग पर चढ़ता चला गया।

संग्राहकों का यही वर्ग था जिन्होंने इस शौक के विभिन्न जटिल पहलुओं को एक चुनौती के रूप में लिया। डाक टिकटों की प्रत्येक डिजाइन के रंगों के क्रम विन्यास, कागज, जल चिन्ह (वाटरर्माक),छिद्रण में किये जाने वाले परिवर्तनों आदि की इति वृत्ति की खोज के कार्य को अत्यन्त रूचिकर पाया, इस प्रकार डाक टिकट संकलन के क्षेत्र में वैज्ञानिक आधार पर टिकटों का अध्ययन और वर्गीकरण की नई प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई।

डाक टिकट संकलन के एक सामाजिक शौक के रूप में विकसित हो जाने के कारण आम लोगों में इसकी रूचि बढ़ने लगी और फलस्वरूप इससे सम्बन्धित क्लबों संस्थाओं, प्रकाशकों आदि के संयुक्त प्रयासों से इस शौक को नई दिशा मिली। संग्रहकर्ताओं के संकलन का प्रदर्शन करने के लिये जिला, राज्य, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर डाक टिकट प्रदर्शनी ने डाक टिकट संग्राहकों की संख्या में वृद्धि करने में भरपूर सहयोग प्रदान किया।

भारत में फिलैटिलिक साहित्य

1996 में मुम्बई के जनरल पोस्ट आफिस में पोस्टल म्यूजियम की स्थापना की गयी। डाक टिकट के संग्रहकर्ताओं के लिये समय–समय पर नये–पुराने डाक टिकटों की जानकारी से सम्बन्धित कैटलॉग छपते हैं, देश विदेश में असंख्य डाक टिकट कैटलॉग निकाले जाते हैं।

इस रूचि पर बड़े प्रमाण के लिये हर वर्ष साहित्य छपता है, हजारों पुस्तकें और सैकड़ों पत्रिकाएं डाक टिकट संग्रहकर्त्ताओं के फायदे के लिये छापे जाते हैं जो कि टिकट संग्रह में सफलता की चाबी यानी उस क्षेत्र का ज्ञान मानी जाती है। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक पत्रिका, मासिक और वार्षिक अंक दुनिया के कितने ही देशों द्वारा हर वर्ष छापे जाते हैं। परन्तु यह अंक मंहगे होते हैं।

भारत में ''फिलेटेलिक जर्नल आफ इंडिया'' नामक पत्रिका मुम्बई से प्रकाशित होती है जिसे 1997 में 100 वर्ष पूरे हुये हैं। इस शौक के प्रचार के लिये कई संस्थाएं और कम्पनियां कार्यरत हैं। अब तो हर शहर के मुख्य डाकघर में फिलेटेलिटो के लिये विशेष सेवाएं डाक विभाग द्वारा शुरू की गई हैं।

रोचक तथ्य

- विश्व का प्रथम डाक टिकट ''पेनी ब्लेक'' नामक ग्रेट ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने 01 मई 1840 के दिन जनरल पोस्ट आफिस में बेचने के लिये रखा जिसकी प्रसार संख्या 6,81,58,080 थी।

- भारत का सबसे पहला 100 रूपये के मूल्य वाला डाक टिकट राजीव गांधी को श्रद्धांजली देने के रूप में है जोकि 6.1 x 4.6 सेमी माप का है इस पर राजीव गांधी की तस्वीर है और ''राजीव गांधी एक जीवन भारत को समर्पित'' सन्देश लिखा है।

- दुनिया के दुलर्भ टिकटों में भारत में 1852 में जारी प्रथम डाक टिकट ''सिंध डाक'' मोरीश ब्रुश नामक संग्रहकर्ता ने 3,00,000 रूपये में खरीदा था जो अंत में 4,50,000 रूपये में नीलाम हुआ था।

- दुनिया भर के 200 से अधिक देश सवा तीन लाख से भी ज्यादा टिकट जारी कर चुके हैं।

- संग्रहकर्ता फिलिप वान फेरारी का टिकट संग्रह 1925 में 16,36,524 डालर में नीलाम हुआ था जबकि कर्नल एच.आर. ग्रीन का संग्रह 30 लाख डालर में बिका था।

माना जाता है कि पुस्तकें और यात्राएं जानकारी हासिल करने के लिये दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इन्हीं के 'शॉर्टकट' के रूप में डाक टिकट संकलन को अपनाया जा सकता है। इनके माध्यम से घर बैठे ही विश्व के समस्त देशों की यात्रा कर सकते हैं। उन देशों के निवासियों के पहनावे, भवनों, स्मारकों, खेलकूद, महापुरूषों, फिल्मों, वन्यजीवन, मृत्यु, संगीत आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। जिसमें विभिन्न शासकों के राज्य, विवाह, यात्रायें, युद्ध और सन्धियां सम्मलित होती हैं। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंगों, निरस्त्रीकरण, सम्मेलन जैसे शक्ति प्रयासों पर भी दुनिया के हर देश ने डाक टिकट जारी किये हैं। इस दृष्टि से डाक टिकट वास्तव में विश्व इतिहास का दर्पण कहे जा सकते हैं।

महामति बैकन ने एक बार कहा था कि इतिहास मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है, यदि हम इस कथन को स्वीकार करते हैं तो मानना होगा कि कम से कम डाक टिकट इतिहास के अध्ययन को अत्यन्त रोचक बना देते हैं, वे सन् संवतः जो अच्छे–अच्छे बुद्धिमान छात्रों के लिये सिरर्दद बने

रहते हैं, उन्हें एक साधारण अल्प आयु वाला बालक भी डाक टिकट के माध्यम से सरलता से याद कर लेता है।

डाक टिकट संग्रह एक अभिरूचि ही नहीं ज्ञान का अथाह भण्डार भी है, जिसके फूट पड़ने वाला फव्वारा संग्रहकर्ता की जानने–सीखने की प्यास बुझा सकता है, बस आवश्यकता है टिकट संग्रह के साथ–साथ उसके बारे में जानकारी हासिल करने की।

डाक टिकट संग्रहकर्ता के दो विशिष्ट गुण जो इस शौक द्वारा प्राप्त होते हैं, वह ये हैं–स्वच्छता तथा गहन परिक्षण के गुण में एक गम्भीर संग्रहक अपने डाक टिकट संकलन को सदैव व्यवस्थित रूप में रखने का प्रयास करता है वह अपने एलबम को सफाई से कलात्मक, सुन्दरता एवं वार्षिक आधार पर रखने का प्रयास करता है। डाक टिकट अपने अमूल्य खजाने के इस तरह सुरक्षित रखने का वह गुण संग्रहणकर्ता के जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी काम आता है और वह अपना प्रत्येक कार्य स्वच्छता पूर्ण एक सुनियोजित ढंग से करने का प्रयास करता है।

डाक टिकट संकलन का जुनून बच्चों से लेकर बड़ों तक में समान रूप से लोकप्रिय बना हुआ है और यह स्वभाविक ही है। यह शौक संग्रहकर्ता को देश व काल की सीमाओं के पार संसार के विभिन्न भागों में स्थित मानव वर्गों की सभ्यता और संस्कृति से परिचित करता है और इस प्रकार हृदय को व्यापक एवं मस्तिष्क को उदार बनाता है। वास्तव में डाक टिकट राष्ट्रीय भावों को दृढ़ करने के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय सद्भावना और सहयोग बढ़ाते है, जो आज के युद्धग्रस्त और भयग्रस्त मानवता की सर्वोपरि आवश्यकता भी है। (लेखक के पास 1947 से 2020 तक भारत में कुल प्रकाशित टिकटों के लगभग 75 प्रतिशत भाग व्यवस्थति ढंग से संग्रहित हैं)

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य तिलक